INFERENCE THEORY of FORGETTING

Page No.:
Date : 06/05/20

विस्मरण के बाधक सिद्धान्त

बाधक सिद्धान्त के दो मुख्य पहलू हैं जो इस प्रकार हैं-

(क) बाधक सिद्धान्त - पूर्वगामी या पृष्ठोन्मुख अवरोध

(Inference theory: Retroactive inhibition)

(ख) बाधक सिद्धान्त अग्रगामी अवरोध

(Inference theory: Proactive inhibition)

* Criticism:
* Conclusion:

Dr. S. K. Suman
Asst. Prof
Dept. of Psychology
Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner

Q. 22. विस्मरण के व्यवहारवादी सिद्धान्त या बाधक सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

(Critically explain interference theory or behaviouristic theory of forgetting.)

Ans. बाधक सिद्धांत या जिसे हस्तक्षेप सिद्धांत भी कहा जाता है, विस्मरण का एक प्रमुख सिद्धांत है। इस सिद्धांत में विस्मरण की व्याख्या व्यवहारवादियों के नियमों के अनुकूल की गई है। इसलिए इसे विस्मरण का व्यवहारवादी सिद्धांत (behaviouristic theory) भी कहा जाता है।

बाधक सिद्धांत का दावा है कि जब किसी पूर्व सीखी गई अनुक्रिया या विषय अर्थात् मौलिक विषय या पाठ का व्यक्ति प्रत्याह्वान (recall) करता है तो उस समय उन सभी अनुक्रियाओं या विषयों, जिन्हें वह मौलिक विषय के पहले तथा बाद में सीख चुका होता है, से उत्पन्न स्मृतिचिन्ह आपस में अन्त:क्रिया (interaction) करते हैं। इस तरह की अंत:क्रिया के दो परिणाम होते है—सरलीकरण (facilitation) तथा बाधा (interference)।

Scanned with CamScanner

विस्मरण इसी बाधक परिणाम की अभिव्यक्ति करता है। इस तरह का बाधक प्रभाव जितना अधिक होता है, विस्मरण की मात्रा भी उतनी ही अधिक होती है। बाधक सिद्धांत की इस व्याख्या से यह स्पष्ट है कि इसमें विस्मरण का कारण मौलिक विषय के बाद सीखे गए विषय या पाठ (पृष्ठोन्मुख अवरोध) तथा मौलिक विषय के पहले सीखे गए विषय या पाठ (अग्रलक्षी अवरोध) दोनों को बतलाया गया है। फलतः बाधक सिद्धांत के दो मुख्य पहलू है जो इस प्रकार है—

(क) बाधक सिद्धांत–पूर्वलक्षी या पृष्ठोन्मुख अवरोध

(Interference theory : retroactive inhibition)

(ख) बाधक सिद्धांत–अग्रलक्षी अवरोध (interference theory : proactive inhibition) : इन दोनों पहलुओं का वर्णन निम्नांकित है।

(क) बाधक सिद्धांत : पूर्वलक्षी या पृष्ठोन्मुख अवरोध : पृष्ठोन्मुख अवरोध की व्याख्या बाधक सिद्धांत के अनुसार सबसे पहले मैग्यू (McGeoch) द्वारा की गई। इन्होंने इसकी व्याख्या करने के लिए एक विशेष प्राक्कल्पना (hypothesis) बनाई जिसे स्वतंत्र प्राक्कल्पना (independence hypothesis) कहा गया। इस प्राक्कल्पना के अनुसार मौलिक विषय के सीखने से उत्पन्न स्मृतिचिन्ह तथा अवरोधक विषय से उत्पन्न स्मृतिचिन्ह दोनों ही एक साथ स्वतंत्र रूप से बिना एक दूसरे को प्रभावित किए संचित रहते है। जब व्यक्ति मौलिक पाठ का प्रत्याह्वान करता है तो मौलिक पाठ के स्मृतिचिन्हों एवं अवरोधक पाठ के स्मृतिचिन्हों के बीच एक तरह की प्रतियोगिता उत्पन्न होती है जिसका परिणाम यह होता है कि मौलिक विषय का प्रत्याह्वान कम हो जाता है, यानी उसका विस्मरण हो जाता है। मैग्यू ने यह भी बतलाया है कि जब मौलिक विषय तथा अवरोधक विषय के बीच समानता अधिक होती है तो प्रत्याह्वान के समय दोनों विषयों के स्मृतिचिन्हों में प्रतियोगिता अधिक होती है जिससे व्यक्ति मौलिक विषयों या पाठों का प्रत्याह्वान कम कर पाता है और उसका विस्मरण हो जाता है। चूँकि मैग्यू के इस सिद्धांत में विस्मरण की व्याख्या मौलिक पाठ तथा अवरोधक पाठ के स्मृतिचिन्हों के बीच उत्पन्न प्रतियोगिता के आधार पर होती है, इसलिए इसे अनुक्रिया-की-प्रतियोगिता सिद्धांत (competition of response theory) भी कहा जाता है। इसे स्थानांतरण सिद्धांत (transfer theory) भी कहा जाता है क्योंकि मैग्यू ने यह भी बतलाया है कि इस तरह की प्रतियोगिता के कारण एक तरह का नकारात्मक अंतरण (negative transfer) होता है जिससे मौलिक विषय के प्रत्याह्वान में कमी आ जाती है।

मैग्यू ने अपने सिद्धांत में यह भी स्पष्ट किया है कि मौलिक विषय या पाठ के प्रत्याह्वान के समय स्मृतिचिन्हों के बीच हुई प्रतियोगिता की अभिव्यक्ति तीन तरह के सूचकों (indices) द्वारा होती है—प्रकट अंत-सूची बल प्रवेश (overt interlist intrusion) जिसमें मौलिक पाठ का प्रत्याह्वान करते समय अवरोधक पाठ (interfering task) के स्मृतिचिन्ह एक तरह से बलप्रवेश (intrusion) करते हैं तथा प्रकट अंतरासूची बलप्रवेश (overt intralist intrusion) जिसमें मौलिक पाठ या सूची का प्रत्याह्वान करते समय जिस पद का या एकांश का प्रत्याह्वान करना चाहिए था, उसका प्रत्याह्वान न करके उसकी जगह व्यक्ति एक दूसरे पद का प्रत्याह्वान करता है। अप्रकट बलप्रवेश (covert intrusion) में मौलिक विषय या पाठ का प्रत्याह्वान करते समय अवरोधक पाठ का पद या एकांश व्यक्ति के मन में अपने-आप आ जाता है, फिर उसे गलत समझकर वह प्रत्याह्वान न करके चुप रह जाता है। इन तीनों तरह के बलप्रवेश में प्रथम दो तरह के बलप्रवेश से विस्मरण अधिक होता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा मैग्यू के इस सिद्धांत की कुछ आलोचनाएँ निम्नांकित बिन्दुओं पर की गई है।

(i) मैग्यू की इस अनुक्रिया-की-प्रतियोगिता सिद्धांत की आलोचना मेल्टन एवं अर्विन

Scanned with CamScanner

(Melton & Irvin) द्वारा की गई है। इन लोगों ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर यह बतलाया है कि विस्मरण का कारण मात्र प्रतियोगिता कारक (competition factor) नहीं होता है, बल्कि अनधिगम कारक (unlearning factor) भी होता है जिसकी चर्चा तक इस सिद्धांत में नहीं की गई है।

(ii) मैग्यू के इस सिद्धांत के अनुसार अगर मौलिक विषय या पाठ की लम्बाई अधिक है तो छोटा विषय या पाठ की तुलना में उसका विस्मरण अधिक होगा क्योंकि बड़ा पाठ या सूची होने पर प्रतियोगी पदों या एकांशों की संख्या अधिक हो जाती है जिससे प्रतियोगिता बढ़ जाती है और उसके प्रत्याहवान में कमी आ जाती है।

(ख) बाधक सिद्धांत : अग्रलक्षी प्रावरोध या अवरोध : बाधक सिद्धांत का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू अग्रलक्षी अवरोध की व्याख्या करना है जब मौलिक विषय या सूची के प्रत्याह्वान में कमी वैसे विषय या सूची के सीखने से उत्पन्न स्मृतिचिन्हों द्वारा की गई प्रतियोगिता के कारण होती है जिसे व्यक्ति मौलिक विषय या पाठ के पहले सीख चुका होता है तो इसे अग्रलक्षी अवरोध कहा जाता है। ग्रीनबर्ड तथा अंडरवुड (Greenberg & Underwood) ने एक प्रयोग किया—10-10 विषय की चार सूचियाँ तैयार करके प्रयोज्य को एक-एक करके सीखने के लिए दी और एक-एक करके 48-48 घंटे के बाद उसका प्रत्याह्वान करने के लिए कहा। परिणाम में पाया गया कि प्रयोज्य ने पहली सूची का प्रत्याह्वान 69% किया जबकि अंतिम सूची का प्रत्याह्वान मात्र 25% किया। इसका मतलब यह हुआ कि पहली सूची का विस्मरण 31% हुआ जबकि दूसरी सूची का विस्मरण 75% हुआ। प्रयोगकर्ताओं के अनुसार चौथी सूची का विस्मरण इसलिए अधिक हुआ क्योंकि इसके पहले प्रयोज्य तीन और सूचियों को सीख चुका था जिनसे उत्पन्न स्मृतिचिन्ह सूची के सीखने से उत्पन्न स्मृतिचिन्हों के साथ प्रतियोगिता कर रहा था। अंडरवुड तथा पोस्टमैन (Underwood & Postman) एवं पोस्टमैन, स्टार्क तथा फ्रेजर ने भी अपने-अपने प्रयोगों के आधार पर बाधक सिद्धांत द्वारा अग्रलक्षी अवरोध की उक्त व्याख्या का समर्थन किया है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बाधक सिद्धांत द्वारा अग्रलक्षी अवरोध (proactive inhibition) की प्रदत्त व्याख्या द्वारा एक महत्वपूर्ण तथ्य की व्याख्या नहीं होती है। सामान्यत: अवरोधक पाठ विराम अभ्यास (distributed practice) से सीखने पर अविराम अभ्यास (massed practice) से सीखने की अपेक्षा अधिक मजबूत होना है। फलत: ऐसी हालत में अग्रलक्षी अवरोध की मात्रा विराम अभ्यास में अविराम अभ्यास की अपेक्षा अधिक होनी चाहिए। अंडरवुड एवं एक्स्ट्रैण्ड (Underwood & Ekstrand) ने अपने प्रयोग में इसके विरुद्ध तथ्य पाया है। दूसरे शब्दों में इन्होंने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में पाया कि जब अवरोधक सूची को विराम अभ्यास देकर सीखा गया था तो अग्रलक्षी अवरोध की मात्रा कम थी परन्तु जब उसे अविराम अभ्यास देकर सीखा गया था तो अग्रलक्षी अवरोध की मात्रा अधिक थी जबकि बाधक सिद्धांत के अनुसार ऐसा नहीं होना चाहिए था।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि बाधक सिद्धांत में विस्मरण के दोनों पहलुओं अर्थात् पृष्ठोन्मुख अवरोध तथा अग्रलक्षी अवरोध की जो व्याख्या की गई है वह अपने-आप में एक महत्वपूर्ण व्याख्या है। यद्यपि कुछ मनोवैज्ञानिक इस सिद्धांत से कुछ बिन्दुओं पर असंतुष्ट अवश्य रहे हैं, फिर भी अभी इस सिद्धांत का कोई सर्वमान्य एवं संगत विकल्प नहीं है।

Scanned with CamScanner